वर्ष 28, अंक 09 सितम्बर-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी ।
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सुखम्

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

तमिलनाडु के सेलम जिले से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली, एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है ।

नरोत्तम बन नरसिंह, करते पूजा पाठ ।
शिव भक्त को अतुल दान, उसी में सुख महान ।।

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi in Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
Second Agraharam, Salem - 636 001.
Visit us at https://shabari.in/

शबरी परिवार का विद्या-उत्सव

शबरी शिक्षा संस्थान, सेलम

हर घर में हिन्दी हर मन में हिन्दी को स्थान देने के उद्धेश्य से हिन्दी की सेवा में शबरी शिक्षा संस्थान निरंतर कार्य कर रहा है । विद्यालय में तथा अन्य माध्यमों से हिन्दी सीखनेवाले विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए हम विभिन्न रूप से काम कर रहे हैं ।

शबरी के महत्वपूर्ण कार्यों में वाणी विकास परीक्षाओं का अपना अलग स्थान है । हिन्दीतर प्रदेश में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने में हम अत्यधिक हर्ष का अनुभव कर रहे हैं । वाणी विकास परीक्षा के आठों स्तरों में उत्तीर्ण छात्रों का उत्साह बढ़ाने के लिए **विद्या-उत्सव** में उनका सम्मान कर रहे हैं ।

अत्यधिक खुशी के साथ हम घोषित करते हैं कि शबरी वाणी विकास परीक्षाओं का द्वितीय **विद्या-उत्सव** सितंबर महीने के 27 तारीख रविवार को सेलम जिले के जयराम कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साइंस, चिन्नतिरुपति में विशिष्ट रूप से संपन्न होनेवाला है ।

शबरी परिवार के इस **विद्या-उत्सव** में पदवीदान समारोह के प्रतिभागी सस्नेह आमंत्रित हैं ।

आइए । अपना गौरव बढ़ाइए ।।

इस अंक में

अनमोल वचन 6
संपादक की कलम से 7
कसूर 8
हिन्दी और युवा शक्ति के बिना... 10
लोक मंगल और जन-नायक 12
कन्नदासन...गीतों का नायक 14
हिन्दी का गुणगान................ 15
भारत के ऋषि मुनि 16
वंदेमातरम्........................ 17
सावन............................. 18
शीश उठाओ हे भारतवासी 19
तराज़ू का सच 20
महँगाई पर दोहे 21
सम्मान........................... 22
एक दीप आओ जलायें 23
गज़ल............................. 23
बाल पहेलियाँ वंदेमातरम् की..... 24
शिव 25
खून से लाल हुई वर्दी... ! 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
बात समझना...................... 30
अगर ऐसा होता तो 30
मेंढक की सीख 31
सहमति चाहिए.................... 31
देश अपना अति प्यारा 32
नियति 32
कविता 33
इस पल........................... 33
गज़लें 34
थकान और प्रेम.................. 34
कश्ती के मुसाफिर 35
दौलत और अदालत 35
एक ही पल में 36
आदिवासी मूलनिवासी 36
आशा............................ 37
चेहरे के पीछे 37
रिश्ता फीका नहीं 38
महादेव 39
पाठकों के पत्र 39
नवांकुर 41
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्. 43
தமிழமுது 45
அருள் உலா 46

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
அக்டோபர்-2026	25-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026
ஏப்ரல்-2027	18-04-2027	01-01-2027 to 28-02-2027	05-03-2027
ஜூலை-2027	18-07-2027	01-04-2027 to 31-05-2027	05-06-2027

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ **D.D.** ***மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.***

our web portal @ **https://shabari.in**

உ

पढ़ो मन भरके

शबरी
शिक्षा समाचार

वर्ष 28, अंक 09 | मूल्य ₹ 3/- | सितम्बर - 2026

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414

Office Phone : **9842765414**

Office Phone : **9443365414**

VANI VIKAS NUMBER

88704-55599 | Office Hrs : **10 AM - 5 PM**

0427-4265414, 4552100

अनमोल वचन

सपनों में प्रेमी

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर के अनुसार – मेरे प्रेमी की दूरी से चिंतित होकर जब मैं सो पाई तब सपनों में आकर उन्होंने जो समाचार दिया उसके बदले में मैं कर क्या सकती हूँ ?

मछली–सी मेरी सुंदर आँखें मेरे प्रेमी की याद में दुख अपनाकर कभी नहीं सोती । मेरी विनती करने पर अगर वे सो जाएँगी तो मैं सपने में अपने प्रेमी को देखकर मेरे जीने की बात उनसे कहूँगी ।

मेरे प्रेमी जो मेरे पास आकर अपना प्यार नहीं बरसते हैं उनके कम से कम सपने में आकर मुझे देखने के कारण ही मेरी जान मुझसे दूर न होकर मैं आज भी जीवित हूँ ।

मेरे पास आकर प्यार नहीं देनेवाले प्रेमी को सपना ही मेरे पास लाकर मेरी मदद करती है । इसलिए उसे सपने से मुझे प्यार का सुख मिलता है ।

मेरे प्रेमी के मिलन से तन मन तब सुख का अनुभव कर रहा था । अब सपनों में जब मैं उनको देखती हूँ वह पल बहुत ही सुखमय रहता है ।

अगर मैं जग ना जाती और हमेशा सोती रहती तो सपने में मेरे पास आनेवाले मेरे प्रेमी भी सदा के लिए मेरे साथ रहेंगे ।

असल में मेरे पास ना आकर मुझे दुख देनेवाले क्रूरी प्रेमी हर रोज सपने में आकर मुझे सताते क्यों है ?

मेरे सोते वक्त सपने में आकर मेरी भुजाओं पर ठहरकर सुख देनेवाले मेरे प्रेमी मेरे जग जाने पर क्यों मन में जाकर बस जाते हैं ?

सपनों में अपने प्रेमी को नहीं देख पानेवाली औरतें, असल में अपने पास आकर प्यार ना देनेवाले प्रेमी को प्यारहीन कहकर निन्दा करती है ।

मेरे गाँववाले कहते हैं कि मेरे प्रेमी मुझे छोड़कर कहीं चले गए । असल में वे लोग मेरे जैसे मेरे प्रेमी को सपनों में शायद देखा नहीं पाते हैं ।

✍ ***संपादक की कलम से ...***

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

मानव के जीवन में पानी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है । पानी को लेकर बड़े-बड़े युद्ध भी हो चुके हैं । पानी बचाओ, प्राणी बचाओ कहते हुए भी हम पानी को बचाना बिलकुल नहीं जानते । पानी के बिना तो जिंदगी कट ही नहीं सकती । मानव ही नहीं इस दुनिया में किसी भी प्राणी का जीना असंभव बन जाता ।

सुनने में आया है कि हाल ही के दक्षिणी प्रांत के मुख्यमंत्री के बैठक में भारतीय गृहमंत्री ने एक ऐसा सुझाव रखा है जो भारत के भविष्य को उज्ज्वल बनानेवाला है । हाँ भारत के दक्षिणी प्रांत में बहनेवाली नदियों को जोड़ने का एक अति महत्वपूर्ण सुझाव गृह मंत्री से रखा गया है । यह सुझाव जब काम में लाया जाएगा तब सागर में मिलनेवाला पानी की मात्रा बहुत कम हो जाएगी ।

भारत का दक्षिणी प्रांत हरा भरा रहेगा । लोगों को पीने का पानी भरपूर मात्रा में मिलेगा । खेत-खलिहानों के लिए भी उचित मात्रा में पानी की व्यवस्था की जाएगी । भाषा और सीमा को लेकर होनेवाली मतभेद भी धीरे-धीरे खत्म हो जाएगा । भारत सरकार का यह उपाय बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा ।

दक्षिणी प्रांत के नदियों को एक दूसरे से मिलाने के साथ-साथ गंगा और कावेरी को भी मिलाना देश के लिए हितकारी कार्य सिद्ध होगा । देश के दीर्घकालीन उन्नति तथा समृद्धि के लिए ऐसी योजनाओं की सख्त जरूरत है । भावात्मक एकता भारत को एक सूत्र में जोड़कर रखी है । हमारे भारत भर में भातृत्व की स्थापना के लिए नदियों को मिलाना अत्यंत जरूरी काम है । इससे दिल भी मिलने लगेंगे देश में एकता सदा के लिए बनी रहेगी ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

कसूर

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

भरत का दिल भय से भरा हुआ था । उसके मन में विश्वास का तनिक भी स्थान नहीं था । आज शाम तो उसको सबसे भयानक लग रहा था । उतरा हुआ चेहरा इस बात की साक्षी दे रहा था कि वह बहुत चिंतित है और दुख से पीड़ित है । तभी आवाज आई – क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ ? खड़े–खड़े एक बुजुर्ग आदमी उससे पूछ रहे थे । आराम से बैठ जाइए स्थान देते हुए खिड़की से बाहर देख रहा था भरत । मुझे रामनगर जाना है क्या यह बस रामनगर जाएगी ? बढ़ते हुए बुजुर्ग ने पूछा ।

यह बस रामनगर तो नहीं जाएगी लेकिन गाँधीनगर तक जाती है । गाँधीनगर ही आखिरी स्टाप है । आप वहाँ उतर जाइए और वहाँ से दो मिनट में आप पैदल रामनगर पहुँच सकते हैं । दशा दिशा बताते हुए भरत ने उत्तर दिया । सर हिलाते हुए बुजुर्ग दो मिनट में ही नींद का सुख अपनाने लगे ।

भरत को लगने लगा यह आदमी तो दो मिनट में ही चैन की नींद लेने लगे हैं ।

मुझे पता तक नहीं है कि कब मैंने चैन की नींद सोई थी । कभी–कभी ऐसे लगने लगता है कि यह जीवन इतना भार भरा क्यों है ? जो माता–पिता ने मुझे जन्म दिया था उन्होंने मेरे साथ चार बहनों और दो भाई को भी जन्म दिए थे । एक छोटे कमरे में हम सब लोग खाते–पीते सोते भी थे ।

खाने से पेट नहीं भरता था लेकिन दिल खूब खुशी से भर जाता था । अकेले मेरे पिताजी कुछ काम कर लाते थे । उसे हम जीवन चला लेते थे । हम भाई–बहन कभी कुछ नहीं माँगते थे जो मिलता था उसी से खुश थे । पता नहीं हम कैसे बड़े हुए लेकिन सब की शादी हो गई और हम में से कुछ नौकरी भी कर रहे हैं ।

यौवन के पागलपन में मैंने भी शादी कर ली थी । पत्नी की सुंदरता सच में मुझे उसकी दास बना चुकी थी । एक पुत्र भी हुआ । मैं चाहता था कि कम से कम दो संतान हो जिससे उनमें लेने देने की आदत हो । लेकिन पत्नी मेरी बात मानने को तैयार न हुई । इकलौता पुत्र बड़े होने लगा । पिताजी स्कूल में उसकी पढ़ाई शुरू हुई ।

मेरी कमाई में लगभग पचहत्तर प्रतिशत उसकी पढ़ाई में खर्च की गई । बाकी से जिंदगी चल रही थी । हर महीने के अंतिम दिनों में डर–डर कर दिन बिताने पड़ते

थे । लड़के के कुछ माँगने पर उसे तुरंत ना पूरा करूँ तो मेरी पत्नी काली का रूप ले लेती थी । उसके मुँह से जो नफरत भरे शब्द निकलते हैं उससे दो–तीन दिन खाना खाने का भी मन नहीं रहता ।

लड़का अब कॉलेज में पढ़ रहा है । एक हफ्ते से गाड़ी की माँग कर रहा है । मेरा हाल तो ऐसा है कि मैं कहीं से भी पैसों का बंदोबस्त नहीं कर पा रहा हूँ । सुबह पत्नी चिल्ला रही थी आज शाम तक तुम कुछ नहीं कर पाओगे तो मेरा असली रूप देखने को मिलेगा । पता नहीं आज क्या–क्या होगा ? बस से उतरते चंचल मन सहित घर पहुँचा भरत ।

भरत को देखते ही चलने लगी उसकी पत्नी – आ गया है निकम्मा । चेहरे को देखते ही पता चल गया कि पैसों का कोई इंतजाम नहीं हुआ है । अगर मेरी शादी किसी और से होती तो मुझे इतना दुख जेल ना नहीं पड़ता । अगर बच्चे पैदा करने का मन रखता है तो उसे ढंग से बड़ा करने की भी क्षमता होनी चाहिए । आज मेरी गलती के कारण मेरा बेटा भी परेशान है । जीने का नहीं, मरने का मन कर रहा है । अपनी माँ की बात सुनते ही घर के सामनेवाले तीन मंजिल वाली मकान जो बन रही थी उसे पर चढ़ने लगा भारत का प्यारा बेटा गोपाल ।

गाड़ी के बिना मैं कॉलेज जा नहीं सकता ! अपने मित्रों के बीच मेरा क्या हाल होगा ? कहते–रहते वह मकान के ऊपर चढ़ गया । भरत की पत्नी तो चिल्ला रही थी भरत अपना थैला फेंकते हुए बेटे के पीछे ऊपर चढ़ने लगा । पत्नी चिल्लाती हुई आई – बेटा कुछ गलत काम मत कर । यह लो मेरा मंगलसूत्र इसे बेचकर ले लो गाड़ी । इस आदमी से कुछ नहीं हो रहा । रुको ! रुको ! रुको ! आ रही हूँ मैं ।

लड़का छत के ऊपर था पिताजी के निकट आते ही उनसे दूर जाने का प्रयास कर रहा था । अचानक उसका पैर फिसल गया । उसे बचाने के चक्कर में उसके हाथ पकड़े हुए भरत भी छत से धड़ाम से नीचे गिरा । छत से जमीन पर पढ़ते ही दोनों की जान शरीर से अलग हो चुकी थी । अपने एक हाथ में मंगलसूत्र रखते हुए भरत की पत्नी भी ऊपर से कूद गई । एक गाड़ी के चक्कर में तीन जान लुट गई । पढ़ाई खत्म होते ही जब कमाने लगेगा तब एक के बदले दो–तीन गाड़ियाँ खरीद सकता था । अब अपने साथ दो जान लेकर पता नहीं लड़का कहाँ गया ? अपने पति को सही ढंग से समझे बिना, पुत्र को सही बातें समझाए बिना ही चल बसी भरत की पत्नी । पता नहीं कसूर किसकी है ?

हिन्दी और युवा शक्ति के बिना आर्थिक सफलता की कल्पना निराधार है

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

आर्थिक सफलता और युवा दोनों एक सिक्के के दो पहलू है, यानि कि युवा शक्ति का दूसरा नाम ही सफलता है और युवाओं की आर्थिक सफलता में हिन्दी का अहम योगदान है । आज युवाओं ने हिन्दी के दम पर ही व्यवसाय और जीवन के हर क्षेत्र में कामयाबी का परचम फहराया है और समाज में अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है और इसी की बदोलत युवाओं ने अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाया है । युवा शक्ति ने यह दिखा दिया है कि वे किसी भी क्षेत्र में कमतर नहीं है और वे इतना सामर्थ्य रखते हैं कि पानी में भी आग लगा सकते हैं, असंभव को भी संभव बना सकते हैं । यानि कि युवाओं की बाजुओं में दम है और उनके दम से ही यह जमाना है । आज युवाओं ने यह दिखा दिया है कि भारत से लेकर अमेरिका और अमेरिका से लेकर लंदन और लंदन से लेकर जापान और समूची दुनिया में उनकी ही तूती बोलती है । भारत की युवा शक्ति के बिना विश्व की आर्थिक व्यवस्था की कल्पना ही निराधार है क्योंकि युवाओं की आर्थिक सफलता का आधार हिन्दी है ।

रोजगारपरक भाषा है हिन्दी

आज बहु राष्ट्रीय कंपनियों को बाजार में अपना माल बेचने के लिए केवल और केवल हिन्दी का ही सहारा लेना पड़ रहा है क्योंकि भारत के हर क्षेत्र में हिन्दी बोली जाती और समझी जाती है । भारत समूचे विश्व में हिन्दी बहुलतावाला एकमात्र अग्रणी देश है । यहाँ तक कि संघ लोक सेवा आयोग में भी हिन्दी भाषा को वरीयता दी जा रही है और कई हिन्दी भाषी प्रतियोगी आज आई.ए.एस. और आई.पी.एस. है । इन युवाओं ने हिन्दी का दामन थाम कर ही अपने सपने पूरे किए हैं । इसके अतिरिक्त कई शासकीय और गैर शासकीय संस्थाओं में हिन्दी अधिकारी अपनी सफलता का लोहा मनवा रहे हैं । कई सफल वक्ता आज हिन्दी में उद्बोधन देकर इसे अपनी जीविका का माध्यम भी बना रहे हैं । दूरदर्शन और रेडियो के हिन्दी उद्घोषक और समाचार वाचक भी इस क्षेत्र में प्रतिष्ठित और स्थापित है । यह हिन्दी के दम पर ही संभव हो सका है । आज हिन्दी मात्र एक भाषा नहीं वरन एक संस्कार भी बन रही है और एक रोजगारपरक भाषा बनकर कई

जिंदगियों को संवार भी रही हैं और आज हिन्दी लाखों परिवारों की जीविका का माध्यम बन चुकी है । युवा आज हिन्दी को अपने रोजगार का माध्यम चुन रहे हैं ।

हिन्दी और तकनीकी आर्थिक सफलता

वैश्वीकरण के इस दौर में तकनीकी क्षेत्र में भी हिन्दी का बोलबाला है । कंप्यूटर में हिन्दी में काम करने के लिए हिन्दी के एडवांस सॉफ्टवेयर का विकास हो चुका है जिसकी सहायता से हम अपनी भाषा में सुविधा अनुसार और बड़े आराम से निःसंकोच काम कर सकते हैं । कृति देव फोंट की मदद से हम हिन्दी में ई–मेल भी कर सकते हैं । आज हिन्दी सोशल मीडिया की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम बन गई है । जिन लोगों को अँग्रेजी न आने का खौफ़ था, आज वहीं हिन्दी को बड़ी शान और गौरव के साथ अपनी वार्तालाप और रोजगार का जरिया बना रहे हैं । हिन्दी अनुवादक और समाचार पत्र–पत्रिका के हिन्दी रिपोर्टर के कार्य में आज लाखों युवा अपनी सेवाएँ दे रहे हैं । हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का यह एक क्रांतिकारी कदम है ।

हिन्दी और युवाओं के सपनों की उड़ान

हिन्दी एक समृद्ध और मीठी भाषा है । हिन्दी जैसी सरलता, सहजता और सुगमता किसी अन्य भाषा में देखने को नहीं मिलती है । हिन्दी में एक ही शब्द के अनेक समानार्थी शब्द है जबकि अँग्रेज़ी भाषा में ऐसा बिलकुल नहीं है । हिन्दी हमारी भारतीय संस्कृति, संचार और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । यदि युवा अपने सामर्थ्य, प्रतिभा, कला कौशल और हिन्दी भाषा का प्रभावी ढंग से उपयोग करें तो वह व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि और कामयाबी हासिल कर सकते हैं । युवा किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति और धन संपदा होते हैं । वे अपने तकनीकी ज्ञान कौशल, शिक्षा, नवचेतना, नवचारिता, उद्यमिता विकास, अवसर, मेहनत, लगन, अनुसंधान तकनीक और नए आइडियास के दम पर आत्मनिर्भर बन सकते हैं और औरों को भी उनके करियर के लिए मार्गदर्शन दे सकते हैं ।

आज हिन्दी युवाओं के सपनों को नई उड़ान दे रहीं हैं और इनकी आर्थिक आजादी और सफलता का मजबूत आधार स्तंभ भी बन रही हैं । हिन्दी, अमृत का वह प्याला है जिसे पीकर कई ज़िंदगियाँ सँवर गई हैं और उन्हें उनके हिस्से का फलक भी मिल गया है । हिन्दी माथे की वह बिंदी है जो अग्नि में तपकर सूरज से नजरें मिलाना सीख गई है क्योंकि हिन्दी ही हमारे जीवन की वह उजली भोर है जो घने तम को चिरकर नव प्रकाश के संग उदित होती है । और...हम भारतीय इस उजली सुबह का बड़ी ही बेसब्री से इंतज़ार कर रहे होते हैं ।

लोक मंगल और जन-नायक संत कवि- गोस्वामी तुलसीदास जी (जयंती विशेष)

– श्री. अशोक पटेल 'आशु', शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

तुलसीदास जी मर्यादा और लोकमंगल की भावना को ध्यान में रखकर साहित्य का सृजन किया है । उनके साहित्य में मानवीय गुणधर्म का अद्भुत संगम देखने को मिलता है । जैसा कि उन्होंने कहा –

''सचिव वेद गुरु तीन जो प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर होहिं बेगिहीं नास ।।''

इसी प्रकार दुष्प्रवृतियाँ अर्थात काम, क्रोध, मद, लोभ, यह सभी मानव के पतन के द्वार हैं । इसीलिए तुलसीदास जी ने इनको नर्क का द्वार कहा । इससे बचने के लिए मानव को ईश्वर की शरण में जाने के लिए अगाह किया :-

''काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ ।
सब परिहरि रघुवीरहिं, भजहुँ भजहिं जेहि सन्त ।।''

तुलसीदास जी की भक्ति भावना बड़ी निर्मल थी । उनकी भक्ति में शक्ति थी । दृढ़ विश्वास था । और इसके लिए उन्होंने नवधा भक्ति की रचना कर डाली ।

''नवधा भक्ति कहहूँ तोहि पाहीं
सावधान सुनूँ धरू मन माहीं ।''

और इस प्रकार से भगवान श्री राम जी ने माता शबरी को नव प्रकार की भक्ति का रहस्य समझाया । जिसने पहिली–संतो की संगति, दूसरी–ईश्वर कथा में प्रेम, तीसरी–गुरु के चरणों की सेवा, चौथी–छल कपट त्यागकर ईश्वर के गुणों का गान, पाँचवीं–ईश्वर में दृढ़ आस्था रखकर मंत्र का जाप, छठवीं–इंद्रियों का वशीकरण, सातवीं–जीव जगत को समभाव में देखना, आठवीं–मन में संतोष, और नवीं–सरलता और सहजता थी । जिसको श्रवण करके माता शबरी धन्य हो गई । और मोक्ष प्राप्त कर लिया ।

तुलसी दास जी की भावना लोक कल्याणकारी रही है। इसीलिए वो कलयुग को ध्यान में रखते हुए लोक मंगल की बात करते हैं –

''मंगल करनि कलिमल हरनि।

तुलसी कथा रघुनाथ की ।।

मंगल भवन अमंगल हारी।

द्रवहूँ जो दसरथ अजिर बिहारी ।।''

इसी प्रकार वो सेवा धर्म के संबंध में कहते हैं

जिसमें सेवा से बढ़कर धर्म नही और दुसरों को पीड़ा देने से बड़ा कोई अधर्म नहीं।

और वो आगे यह भी कहते हैं –

''सब नर करहिं परस्पर प्रीति।

चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीति ।।''

तुलसी दास जी समन्वयवादी कवि माने जाते हैं। रामचरित मानस के प्रत्येक कांड में वो समन्वय करते हुए दिखाया है। उन्होंने प्रेम सद्भावना, मैत्री, भाईचारा, त्याग, मर्यादा का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया है। हनुमान जी के चरित्र में यही बात देखने को आती है।

हनुमान जी द्वारा प्रभु श्री राम को सुग्रीव से मिलाना और फिर उनसे मित्रता कराना। ताकि माता सीता की खोजा जा सके –

''तेहि सन नाथ मयत्री कीजे जानि तेहि अभय करिजे।

सो सीता खोज कराइहिं जहँ–तहँ मरकट कोटि पठाइहिं ।।''

इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि तुलसीदास जी ने लोक–मंगल की भावना से साहित्य सृजन किया, जिसका उदाहरण उनका महाकाव्य रामचरित मानस है। जिसके प्रत्येक कांड में आम जन–मानस के कल्याण और समन्वय की बात कही है। आम जनों के लिए भी सहज और सरल हो गई। तभी तो अयोध्या सिंह उपाध्याय जी ने सही कहा है –

''कविता करके तुलसी न लसै,

कविता लसी पा तुलसी की कला।''

कन्नदासन...गीतों का नायक

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

मुथैया था तब नाम मेरा
मोती–सा है सदा काम मेरा
कोई कभी भूल न पाते गीत मेरा
जो भी देखता हूँ सब सौंदर्य से भरा
मुथैया था तब नाम मेरा
मोती–सा है सदा काम मेरा ।

मैं कविता का ही बेटा हूँ
कविता पर कलम चलाता हूँ
मैं शाश्वत हूँ कभी मरता नहीं
किसी भी हालत में मेरी मृत्यु नहीं
लिखता रहा कभी मरता नहीं
जीता रहूँगा मैं गीतों से यही ।

पाँच हजार से भी अधिक गाने
जन्मा हूँ मैं तो गाने नचाने
हर गीत से मैं दिल चुरा लूँगा
हर दिल में मैं बस जाऊँगा
मैं शाश्वत हूँ कभी मरता नहीं
किसी भी हालत में मेरी मृत्यु नहीं ।

कन्नदासन है शुभ नाम मेरा
कलम चलाना है सदा काम मेरा
दिल जीत लेता हूँ मैं हर एक का
दिलों में भर जाता हूँ मैं सदा सबका
मैं शाश्वत हूँ कभी मरता नहीं
किसी भी हालत में मेरी मृत्यु नहीं ।।

हिन्दी का गुणगान

– श्री. रमेश मनोहरा,
जावरा, म.प्र.

हिन्दी हमारी प्रिय है, रहे इसी का राज
बना देंगे इस जग में, इसका देख समाज
हिन्दी तो बन गई है, भारत माँ का ताज
खत्म करो अब तो सभी, अंग्रेजी का राज
बन गई है हिन्दी तो, सारे जग की माल
हो गई अपने घर में, देखो मालामाल
रही नहीं हिन्दी यहाँ, अंग्रेजी की गुलाम
चमक गया है जगत में, बस इसका ही नाम
हिन्दी में ही बस गये, हम सबके अब प्राण
करेंगे मरते दम तक, इसका हम सम्मान
मोदी हो या हो अटल, खूब बढ़ाया मान
आओ हम मिलकर करें, हिन्दी का गुणगान
हिन्दी से सदैव रखें, आप सभी ही प्रीत
हरदम गावे जगत में, रमेश इसके गीत
हिन्दी हुई आत्म निर्भर, बढ़ाया योगदान
विश्व पटल पर बढ़ गई, देखो इसकी शान
हिन्दी को अब मिल गया, बहुत बड़ा सम्मान
दूजों पर निर्भर नहीं, खुद चढ़ी पायदान
जो हिन्दी के बीच में, खींचे देख लकीर
सारी ही मिटा उसकी, रमेश तू तस्वीर
हिन्दी से देश चलता, हिन्दी सबकी शान
चले नहीं अब तो कभी, इस हेतु खींचतान
जन–जन की भाषा बनी, लाई देख सुराज
देशवासी की निकले, हिन्दी में आवाज
आजादी के बाद से, बदला गये हालात
हिन्दी में होने लगी, घर–घर में अब बात
हिन्दी जिससे भी पढ़ी, हुआ रमेश सुजान
भारतवासी का लगा, बस इसमें ही ध्यान
बनाया है जिसने भी, हिन्दी को आधार
हिन्दी उसका मानती, बहुत बड़ा आभार

(काव्यतरंग)

भारत के ऋषि मुनि

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

भारत के ऋषि मुनि होते थे बड़े महान,
सिर्फ अध्यात्म तक सीमित नहीं ज्ञान ।
वे जीवन को बहुत करीब से जानते थे,
उनकी सोच में समाया हुआ था विज्ञान ।
भारत के ऋषि मुनि...

आर्यभट्ट ने दी है खगोल की जानकारी,
आज भी लगते वे हर वैज्ञानिक पर भारी ।
भगवान राम लंका से अयोध्या कैसे आए ?
कैसे उड़ा आकाश में तब, पुष्पक विमान ?
भारत के ऋषि मुनि...

महर्षि कणाद परमाणु ऊर्जा में निपुण थे,
उनकी खोज के बड़े सकारात्मक गुण थे ।
उनका लोहा आज भी दुनिया मानती है,
परमाणु वैज्ञानिक के रूप में है पहचान ।
भारत के ऋषि मुनि...

महात्मा बोधायन हुए गणित के विशेषज्ञ,
गणित विषय में प्राप्त किया अपना लक्ष्य ।
ऐसा अद्भुत रहा है जग में उनका हिसाब,
उनके आगे सारे गणितज्ञ होते रहे हैरान ।
भारत के ऋषि मुनि...

भास्कराचार्य ने पता लगाया गुरुत्वाकर्षण,
हिन्दू शास्त्रों में मिलता है जिसका वर्णन ।
बहुत दम रहा है पुराने ऋषि मुनियों तब,
भूत के साथ अपने आप जुड़ता वर्तमान ।
भारत के ऋषि मुनि...

महर्षि सुश्रुत जी को कौन नहीं जानता है ?
उनकी शल्य चिकित्सा को जग मानता है ।
भगवान श्री गणेश उपचार कैसे हुआ तब?
यह बात, आज भी खींचती सबका ध्यान ।
भारत के ऋषि मुनि...

किसे पता नहीं नल और नील की कहानी,
युग बीते हैं, लेकिन हो सकी नहीं पुरानी ।
निशानी आज भी मौजूद है रामेश्वरम में,
इस पर हम भारतीय करते हैं अभिमान ।
भारत के ऋषि मुनि...

वंदेमातरम्

– श्री. रवीन्द्र कुमार राणा,
बुलंदशहर, उ.प्र.

राष्ट्र निर्माण की अभिव्यक्ति वंदेमातरम् ।
धर्म निरपेक्षता की सद्प्रेरणा वंदेमातरम् ।।
हिन्दुस्तान की सांस्कृतिक विरासत वंदेमातरम् ।
क्रांतिकारी वीरों की शौर्य गाथा वंदेमातरम् ।।
मातृभूमि की रक्षा का प्रबल स्वर वंदेमातरम् ।
वीरता, अदम्य साहस की प्रेरणा वंदेमातरम् ।।
क्रांतिकारी चेतना का अमर तत्व वंदेमातरम् ।
गणतंत्र भारत का सजग प्रहरी वंदेमातरम् ।।
राष्ट्रीय एकता अखंडता का प्रतीक वंदेमातरम् ।
सनातन संस्कृति का जन जागरण वंदेमातरम् ।।
राष्ट्रवाद, संप्रभुता का प्रखर जोश वंदेमातरम् ।
स्वतंत्र भारत का अटल जय घोष वंदेमातरम् ।।

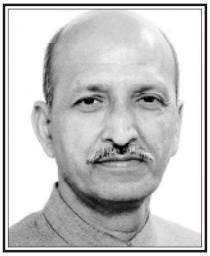

सावन

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

चाहत मेरी संग तुम्हारे झूला झूलूँ,
पेंग बढ़ाकर संग तुम्हारे नभ को छू लूँ।

रिमझिम बारिश की बूँदें, पीपल की शीतल छाँव,
सावन में अमुवा पर झूला, जब सखियों की होती ठाँव।

सखियों संग तेरी झूलना, जलन मुझे बहुत होती है,
सावन में सजनी बाहों में, साजन की चाहत होती है।

सजी हुई हो हाथ तुम्हारे सुन्दर मेहंदी,
दमक रही माथे की बिंदिया छू लूँ।

पैरों पर भी सजा आलता, पायल बाजे,
रूप की रानी आज तुम्हारे रूप को छू लूँ।

केशों में गजरा, आँखों में कजरा छाया है,
सुर्ख गुलाबी लरजते होठों को छू लूँ।

रूप यौवना मदमस्त कली तुम हिरणी-सी,
मृगनयनी चित्तचोर तुम्हारे पग को छू लूँ।

सजा हुआ माथे पर टीका दमक रहा है,
माँग भरा सिन्दुर तुम्हारे माथे को छू लूँ।

शीश उठाओ हे भारतवासी

– श्रीमती. अनुराधा. के,
मंगलूरु, कर्नाटक

भिन्न भाषा है अपनी, है भिन्न वेश ।
भारतीयता का है यही, सम्यक परिवेश ।
भारत भूमि है अपनी, सदा अविनाशी ।
रहे गर्व नित दिन, हम सब है भारतवासी ।

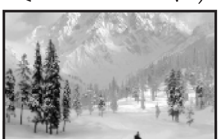

विविधता में एकता सदा दर्शाते हैं हम ।
भारतवासी की अखंडता का यही सच्चा दम ।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक है अपना विस्तार ।
कहीं भी रहे माँ भारती से सब को है प्यार ।

भारत की ये धरती, ये अंबर प्यारे ।
ये पर्वत, नदियाँ, अनंत सागर सारे ।
माँ भारती की ही है सब देन अनमोल ।
सारे भारतवासी इसका मोल ।

देवी–देवताओं की है ये पुण्य भूमि ।
है सदा ऋषि–मुनियों की कर्म भूमि ।
वेद, पुराण, इतिहास से समृद्ध धरा ।
हे भारतवासी भूलो मत कभी इसे ज़रा ।

है सदा ध्यान–योग का सुदृढ़ धरातल ।
सनातन धर्म परंपरा का नैतिक बल ।
धन्य हैं इस धरा पर जो जन्म लिए ।
शीश उठाओ हे भारतवासी सदा के लिए ।

तराज़ू का सच

– श्री. चन्द्रकांत खुंटे 'क्रांति',
जांजगीर, छत्तीसगढ़

आज के दौर में
सत्य और असत्य के मायने बदल गए हैं
अदालत के कमरों से बाहर
सड़कों पर, चौराहों पर या सोशल मीडिया पर
लोग अब न्याय की तराज़ू नहीं देखते
वे सिर्फ झुका हुआ पलड़ा देखते हैं
जिसका पलड़ा भारी है
भीड़ उसी की तरफ दौड़ पड़ती है
वकालत करने, नारे लगाने
सही को गलत और गलत को सही बताने
फर्क नहीं पड़ता कि उस पलड़े में सच है या नहीं
वहाँ बस भारी होना चाहिए
या तो नोटों का बंडल से
या फिर रसूख और ताकत की धमक से
कमज़ोर का सच
हवा में उड़ जाता है सूखे पत्ते की तरह
और ताकतवर का झूठ
पत्थर की लकीर बन जाता है
यह कैसी आधुनिक समझदारी है ?
जहाँ ईमान का सिक्का खोटा हो चुका है
और इंसान सिर्फ भारी पलड़े का गुलाम ।।

पानी बचाओ, जीवन बचाओ,
कल को सुरक्षित बनाओ ।

महँगाई पर दोहे

- श्री. घनश्याम अग्रवाल,
अकोला, महाराष्ट्र

महँगाई कैसे बढ़ी ? पूछ रहे हो तुम ।
महँगाई ऐसे बढ़ी, ज्यूँ हनुमान की दुम ।।

नानी के सम्मुख जरा, आज झुकाया शीश ।
तेल सरीखे तुम बढ़ो, मिला हमें आशीष ।।

दाम देख पिटरौल के, रख ले बात सहेज ।
सब से ज्यादा पाँव ही, देते हैं इव्हरेज ।।

चीरहरण होता रहा, पाँचाली खामोश ।
भाव देखकर वस्त्र के, कृष्ण हुए बेहोश ।।

खास-खास सब हो गई, जो चीजें थी आम ।
आज चना भी कह रहा, मेरा नाम बदाम ।।

अधपकी रोटी खाकर, हमने बचाई गैस,
जिनकी रोटी जल गई, उन पर हो गया केस ।।

गैस रसोई के गरम, और हो गये आज ।
हर दिन माता शीतला, घर में रही बिराज ।।

गंगू तेली हो गया, कल का राजाभोज ।
ऐसे में गंगा कहाँ ? खोज सके तो खोज ।।

एक माह के खर्च का, किया पिता ने जोड़ ।
बच्चे ने धीरज दिया, अपनी गुल्लक फोड़ ।।

सम्मान

– श्री. मोहित.जे. संतोष,
कोवै, तमिलनाडु

कभी मैं सोचता हूँ कि
ज़िंदगी हर चीज़ से जोड़ती है
कभी मैं सोचता हूँ कि
उन चीज़ों को हमारे कर्मों की ओर मोड़ती है ।

चल रहा था मैं एक बगीचे की ओर,
हज़ारों विचार मेरे मन में लिपटे हुए
फूलों के बीच में था एक प्यारा गुलाब,
उसे देखने से मिले थे कई जवाब ।

जिन्दगी इस गुलाब की तरह सुंदर है,
जिन्दगी का मंत्र भी इस गुलाब के अंदर है
जड़ बनकर रहते हैं हमारे माँ–बाप,
और पत्ते बनकर रहते हैं हमारे मित्र ।

तन बनकर रहते हैं हमारे भाई–बहन,
जो काँटों जैसे कष्ट में रहते हैं हमारे साथ हर जगह
उस कष्ट में खिलता हुआ गुलाब है तू,
खिलता हुआ गुलाब है तू !!

कितना अच्छी है हमारी प्रकृति,
जो इतनी बडी बात को एक फूल में बताया ।
तुम अपनी संगत अच्छा रखो,
बाग का सबसे अच्छा गुलाब बनो ।

एक दीप आओ जलायें

देशभक्ति गीत

– श्री. योगिता चौरसिया 'प्रेमाश्री',
मंडला, म.प्र.

रक्षक बनते देश हित, प्रहरी जो अविराम ।
एक दीप आओ जला, करते उन्हें प्रणाम ।।

आया सावन मास है, सुखद बना संसार ।
सरहद पहरा वीर दें, मना रहे त्योहार ।।
पूजे भगवन मानकर, सब शहीद के नाम ।
एक दीप आओ जला, करते उन्हें प्रणाम ।। 1 ।।

सुखमय जीवन हम जिए, सैनिक कारण आज ।
रखे तिरंगा नित बढ़े, अद्वैत-सा अंदाज ।।
मातु भारती लाल ही, रक्षक आठों याम ।
एक दीप आओ जला, करते उन्हें प्रणाम ।। 2 ।।

वीर शहादत को नमन, करते जीवन दान ।
विजय पर्व गढ़ता रहे, भारत वर्ष जवान ।
वीर साहसी सैन्य बल, चलते सुबहो शाम ।
एक दीप आओ जला, करते उन्हें प्रणाम ।। 3 ।।

गज़ल

– श्री. वाई. वेद प्रकाश
रायबरेली, उ.प्र.

सब कुछ पर अधिकार जमाये बैठे हैं,
शिक्षा को व्यापार बनाये बैठे हैं ।
झूठी खिदमत में सब उनकी जाने क्यों,
झूठों का दरबार सजाये बैठे हैं ।
ज्ञान झेलता निर्वासन अब जग से,
खुद तो कारोबार सजाये बैठे हैं ।
फूलों की खुशबू से महके यह बगिया,
चाहत का संसार सज़ाये बैठे हैं ।
सच का दामन बचा न झूठी दुनिया में,
झूठे तो श्रृंगार सजाये बैठे हैं ।
आदि अंत की चिंता आखिर किसको है,
अनुबंधों का द्वार सज़ाये बैठे हैं ।

बाल पहेलियाँ वंदेमातरम् की

– श्री. गौरीशंकर वैश्य विनम्र,
लखनऊ, उ.प्र.

1. राष्ट्रगान से भी पहले अब
   बोलो क्या गाया जाता ?
   दो पद में, पद चार जोड़कर,
   होकर पूर्ण और भाता ।
2. आनंदमठ उपन्यास किसकी कृति ?
   जिसकी रचना राष्ट्रगीत बनी ।
   उस रचना के शब्द-शब्द में,
   मातृभूमि की गंध सनी ।
3. 'वंदेमातरम्' की 150वीं जयंती,
   कब से कब तक गयी मनायी ?
   राष्ट्रगीत ने राष्ट्रीयव्यापी,
   पहली बार ख्याति तब पायी ।
4. लाल किले से प्रथम बार कब,
   'वंदेमातरम्' गया है गाया ?
   'जनगणमन' से भी पहले जब,
   गायन का सम्मान है पाया ।
5. पूरे 'वंदेमातरम्' गायन की,
   समयावधि क्या है बोलो ?
   खड़े हो सावधान मुद्रा में,
   तनिक न इधर-उधर डोलो ।
6. राष्ट्रगान के ही समान अब,
   राष्ट्रगीत पाएगा मान ।
   गायन का यदि किया अनादर,
   कौन-कौन हैं दण्ड-विधान ?
7. राष्ट्रगीत गायन में बाधा,
   अब पहुँचाना है अपराध ।
   नया बना कानून कौन-सा ?
   पूरी हुई पुरानी साध ।

उत्तर :-

1) राष्ट्रगीत वंदेमातरम्,
2) बंकिमचंद्र चटर्जी,
3) 7 नवंबर 2025 से 7 नवंबर 2026 तक,
4) 15 अगस्त 2026,
5) 3 मिनट 10 सेकेंड,
6) तीन वर्ष की सजा, जुर्माना या दोनों,
7) राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण (संशोधन) अधिनियम, 2026

कलम चलाओ
कविता बहाओ
साहित्यकार बन
शबरी के साथ तुम ।

शिव

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

हर श्वास में है शिव,
हर आस में हैं शिव,
विश्वास में है शिव,
शिव ही है संरक्षक ।

अंतस प्रेरणा है शिव,
प्रेषक तत्व भी है शिव,
फलीभूत संकल्प है शिव,
शिव ही हैं मार्गदर्शक ।

जन्म उत्पत्ति है शिव,
अटल मृत्यु भी है शिव,
अनाहत नाद है शिव,
शिव ही है मोक्षकारक ।

आत्म बंधन है शिव,
प्राण प्रबंधन हैं शिव,
आनंद मिलन है शिव,
शिव ही है व्यवस्थापक ।

भूतकाल है शिव,
वर्तमान भी है शिव,
मंगलकारी है शिव,
शिव ही है कर्म संचालक ।

खून से लाल हुई वर्दी... !

– श्री. संजय एम. तराणेकर,
इन्दौर, म.प्र.

वहाँ पे खून से लाल हुई जो वर्दी,
वह केवल मात्र 'कपड़ा' नहीं थी ।
उसमें एक घर की भी उम्मीद थी,
माई की दुआँ, बच्चों की हँसी थी ।
उस सड़क पर जब 'पत्थर' बरसे,
यूँ घायल हुए उनके कई अरमान ।
वे तो कर्तव्य निभाने ही निकले थे,
कैसे बन गए वे हिंसा की पहचान ।
वर्तमान लोकतंत्र का अर्थ यही है,
आज संवादों से ही 'राह' निकले ।
यदि क्रोध की ज्वाला जब भड़के,
तब रिश्तों के 'दीपक' ना ही बुझें ।
न कोई छात्र दोषी कहलाएँ सब,
सम्मान रहें न हर वर्दी कठोर बने ।
निर्मल सत्य वही है जो न्याय करे,
उससे मानवता और मजबूत बने ।
आओ ऐसा देश हिन्दुस्तान बनाएँ,
जहाँ मतभेदों का भी सम्मान हों ।
ना खून से कभी लाल हों वर्दियाँ,
ना आँसूओं से वीरान मकान हों ।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, 2வது அக்ரஹாரம், சேலம்-1.
88704-55599 & 0427-4265414, 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் https://shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகக் கட்டண விவரம் :

புத்தகத்தின் பெயர்	**தொகை**
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00
வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

புத்தகக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

புத்தகக் கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

नरसिंह मुनैयरैय नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

जन्म पाना किसी के हाथ में नहीं हो जाता वह कहीं
जन्म पाकर भी सबकुछ पाना हर किसी के हाथ नहीं
जन्म उसे साफल्या बनाना सबको नहीं आता है यहाँ
जन्म पाकर सही तरह से ना जी कर जाना है कहाँ ?
जन्म अगर हो जाता राजा के घर में सब सुख मिलता
जन्म अगर हो जाता रंक के यहाँ फिर तो सुख का नाम कहाँ ?
जन्म से कुछ राजा का जीवन पाते आते हैं यहाँ
जन्म से शिव का नाम जो लेते हैं शिव पद पाते वहाँ ।

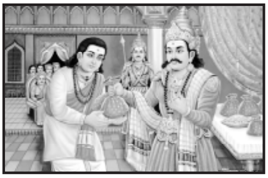

नरसिंह का जन्म हुआ एक राजा के घर में सुख भरा
नाम था तिरुमुनैप्पाडी राज्य था वह छोटा सुखभरा
नाम लेते थे शिवजी का ये बचपन से तथा पूर्ण मन से
नामी बने थे नरसिंह गुणी तो पहले से ये बने हुए थे
शिव मंदिर में पूजा पाठ का इंतजाम करते रहे अथक बन
शिव शिव हर हर कहते रहते सदा सर्वदा ये भक्त बन
शिव महिमा का गायन करते भक्त महान हमेशा बना
शिव भक्ति से शिव भक्त है बड़ा मानता रहा इनका मन ।

मंत्र से बड़ा है दुनिया में भस्म सारे तंत्र से बड़ा है भस्म
भाषाओं में श्रेष्ठतम भाषा का मार्ग बन जाता है भस्म
आशाओं में अति विशिष्ट आशा बन जाता है यह भस्म
अनंत धन से भी अत्यंत महत्वपूर्ण ठहरता है यह भस्म
अंत तक जीवन के अंत तक कवच बन रक्षा करता है भस्म
मानव ही नहीं योगियों मुनियों का भी आभूषण है यह भस्म
शिव भक्तों का सबसे मूल्यवान साधन है यह भस्म
शिव भक्तों का सबसे मूल्यवान साधन है यह भस्म ।

मानव मुख की शोभा है यह भस्म बनता अपना ही किस्म
माथे का अलंकार बन जाता है भक्त बनाता है यह भस्म
शिव का नाम लेकर जो यह भस्म अपनाता है भक्त बनता
शिव नाम सहित जो भस्म अपनाता वह पूजनीय बनता
भस्म अपनाकर जो भी भक्त आ जाते हैं नमन करते
भक्त को सोने के सिक्कों से बड़े प्यार से सम्मान करते
भस्म अपनाकर जो भी भक्त आ जाते हैं नमन करते
भक्त को सोने के सिक्कों से बड़े प्यार से सम्मान करते ।

शिव भक्त का रूप जो अपनाकर सामने आते नमाते
शिवजी ही का रूप उन सब में नरसिंह हर रोज देख पाते
भस्म लगाकर जो भी सामने आते उन सब में भक्त देखते
दुष्ट भी क्यों ना हो भस्म सहित जो आते इन्हें भले लगते
एक बार ऐसा ही हुआ एक दुष्ट सम्मान अपने सामने आया
सबको पता है वह साधारण है कोई भक्त तो नहीं है
भस्म सहित उसे देखकर नरसिंह उसे भी दिए सोन मुद्राएँ
भक्ति का असली रूप दिखाकर नरसिंह शिव को पाए ।

शिवजी के परम स्नेही परम भक्त थे सुंदर नायनार महान
शिवजी आए एक बार नहीं अनेक बार इस भक्त के नाते
नरसिंह नायनार को मिला एक और भाग्य अहो भाग्य
नायनार सुंदरमूर्ति को महल में पालने का वह महान भाग्य
साधारण जीवन से संपन्न जीवन उन्हें नरसिंह दे पाए
शिव जी के परम पावन चरणों में एक स्थान ये पाए
भक्ति अपनाओ वक्त की सेवा अपना कर शिव पाओ
भक्तों को यह राह दिखाए नरसिंह नायनार शिव पद पाए ।

नरोत्तम बन नरसिंह, करते पूजा पाठ ।
शिव भक्त को अतुल दान, उसी में सुख महान ।।

बात समझना

– श्री. मीरा सिंह 'मीरा', बक्सर, बिहार

बात कहूँ हालात समझना
दिन को कभी न रात समझना ।

जब होता सुख का उजियारा,
साया चलता साथ समझना ।

दिल में रहने वाला अक्सर,
छिपकर करता घात समझना ।

मिले कहीं पथ में जब बाधा,
कुदरत की सौगात समझना ।

इस दुनिया को रचनेवाला,
देख रहा दिन–रात समझना ।

दरक रही जब घर की दीवारें,
बदले क्यों हालात समझना ।

कभी देखना खुद से मिलकर,
सहमे क्यों जज़्बात समझना ।

सुख–दुख आते–जाते रहते,
कहूँ पते की बात समझना ।

यह जीवन है एक परीक्षा,
ईश्वर का प्रसाद समझना ।

तुम अपनी दिल की कह देना
मेरी भी जज़्बात समझना ।

अगर ऐसा होता तो

– श्री. टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला', घोटिया–बालोद, छत्तीसगढ़

जरूरी नहीं है कि
एक धनाढ्य की बेटी
एक धनाढ्य ससुराल पाकर
खुशियाँ ही खुशियाँ बाँधेगी अपने आँचल में;
और अगर ऐसा होता तो,
अवधेश की वैदेही को भला
क्यों मिलता वनवास ही वनवास ।

जरूरी नहीं है कि
अनंत प्रीत हो जब ईश्वर से
और भक्ति का ऐश्वर्य ही
मिलता रहे आजीवन;
और अगर ऐसा होता तो,
राणा का भेजा हुआ ज़हर
मीरा को नहीं पीना पड़ता ।

जरूरी नहीं है कि
एक प्रतापी सम्राट पिता महाराणा
वीरांगना अजदबे की नन्हीं तनया
वंचित हों अपने हिस्से के कष्टों से,
और अगर ऐसा होता तो,
उन्हें वन–वन भटकते हुए
नहीं खानी पड़ती घास की रोटियाँ ।

बाल कविता

मेंढक की सीख

– श्री. प्रिया देवांगन 'प्रियू',
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

उछल ताल से मेंढक आया ।
जोर–जोर से वह टर्राया ।।
फुदक–फुदक सबके घर पहुँचा ।
दरवाजे पर वह चिल्लाया ।।
आओ सारे बच्चे बाहर ।
हाथ पकड़ वह सबको लाया ।।
लाया ताल किनारे सबको ।
पत्थर देकर उन्हें बिठाया ।।
बोला देखो मौसम सुंदर ।
बारिश का फिर भेद बताया ।।
ताल–तलैया भरे लबालब ।
डुबक–डुबक कर खूब हँसाया ।।
कुछ बच्चों ने गाया गाना ।
कोई अपना नाच दिखाया ।।
रंग–बिरंगे देख नज़ारे ।
सबका मन अब था हर्षाया ।।
घर से बाहर प्यारी दुनिया ।
समझ आज बच्चों को आया ।।
मित्र बने फिर आपस में सब ।
इक–दूजे को गले लगाया ।।

सहमति चाहिए

– डॉ. शिखा अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

बाहर से हर वक्त
स्मार्ट होने का दिखावा
लेकिन अंदर से
बिखरे हुए लोग,
खुद को कमतर
नहीं समझते,
बस दूर रहते हैं
रिश्ते नातों से ।
परिवार की जड़ें
खोखली होने लगी हैं ।
आजादी के नाम पर
घर के कई टुकड़े हो गए हैं
पर सोशल मीडिया पर
देश–विदेश घूमने की
फ़ोटो बेशुमार हैं ।
पति–पत्नी में संदेह,
पिता–पुत्र में मतभेद
माँ और बच्चों में
बढ़ती दूरियाँ
इस जीवन के
अकेलेपन के साक्षी हैं ।
ये मोबाइल से मन लगाते,
ग्रॉक से चैट करते हैं
क्योंकि वह हर बात से
सहमति जताता है
प्रश्न नहीं पूछता,
असहमति नहीं जताता
आज का इंसान सिर्फ
यही तो चाहता है ।

देश अपना अति प्यारा

– डॉ. आनंद दाधीच,
बेंगलुरु, कर्नाटक

युवा साथियो करो वंदन,
मातृभूमि का अभिनंदन ।
देश अपना अति प्यारा
माटी है महकता चंदन ।

जल गंगा का बड़ा पावन,
पवन यहाँ की मनभावन ।
देश अपना अति प्यारा,
बड़े सुन्दर सागर संगम ।

अनंत देव व देव रूपम,
गाँव–गाँव मंदिर अनुपम ।
देश अपना अति प्यारा,
चले आस्था से जीवन ।

भक्ति, शक्ति का हो जागरण,
सेवा, त्याग बने आचरण ।
देश अपना अति प्यारा,
बढ़े राष्ट्र का गौरव–वंदन ।

वीर जवानों का अभिनंदन,
सीमा पर करे नित संरक्षण ।
देश अपना अति प्यारा,
वीरों से है इसका वंदन ।

विविध भाषा, वेशभूषण,
एक भाव, एक ही स्पंदन ।
देश अपना अति प्यारा,
एकता इसका आभूषण ।

ज्ञान–विज्ञान का हो संवर्धन,
मानवता हो मन का दर्पण ।
देश अपना अति प्यारा,
बने अपना संकल्प–भजन ।

नियति

– श्री. राजेन्द्र
परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

सूरज का वरदहस्त
जब तक
मेरे सिर पर रहता है,
मेरी छाया भी
चरणों के पास
रहती है ।

परंतु
उसकी भक्ति
स्वार्थ में बदल जाती है ।
लघु–काया
विशाल हो जाती है ।

जैसे ही
सूरज की दृष्टि
मुझ पर
तिरछी हो जाती है ।

कविता

– श्री. सरिता
सिंघई 'कोहिनूर',
बालाघाट, म.प्र.

ये रूहानी मौसम प्यारा,
काला बदरा कारा कारा,
रोशन घर में है अंधियारा,
मन गदगद हो गया हमारा ।
छाया बदरा है नभ थल में,
माटी बदली है दलदल में,
झरने बहते कलकल सारे,
पास बुलाते हैं वो प्यारे ।।
हरियाली की सुंदर चादर,
धरती ने भर ली हर गागर,
गीला–गीला अंदर बाहर,
लहरें लेता ऊँची सागर ।।
पास बुलाता प्यारा सावन,
धुला गगन व धुला–सा आँगन,
फूलों पर छाया है मधुबन,
व्याकुल मन में होवे तड़पन ।
नदियाँ, पोखर, झरना, पानी,
सब मिल गाते नई कहानी,
यादें आती बचपन नानी,
कितने सुंदर दिन सुहानी ।
अपनी मस्ती में रहते थे,
अपने मन की बस कहते थे,
बिन मतलब के सब सहते थे,
मन की मन में ही गहते थे ।
काश कोई जजमान बुलाले,
मीठी पूरन–पूरी खिलवा दे,
खाकर सारी मौज करा दे,
निंदिया रानी नींद दिला दे ।
स्वर्ग का वो एहसास सुनेहरा,
मन पर आशाओं का पहरा,
स्वर्ग लोक धरती पर लहरा,
सुंदर लागे जीवन सारा ।
आओ मिलकर मौज मनाये,
दुनिया के सुख सारे पाये,
सारे मित्र पास आ जाये,
मिलकर सारे मंगल गाये ।।

इस पल

– श्री. पूरवी
तालुकदार,
बेंगलुरु, कर्नाटक

लोग कहते हैं
कि इस पल में जिओ,
इस पल में जीना...
इतना आसान है क्या !
जहाँ भी जाऊँ
बीते हुए कमबख़्त पल
पीछा नहीं छोड़ते,
और हकीक़त तो यह है कि
आनेवाले पल भी
सुंदर सपने दिखाते

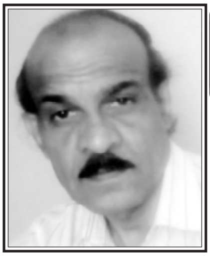

ग़ज़लें

– श्री. नवीन माथुर पंचोली,
अमझेरा, धार, म.प्र.

– 1 –

वो बहुत इत्मीनान रखता है ।
साथ जो दिल जवान रखता है ।
पूछ कर हाल आप-अपनों के,
साथ औरों का ध्यान रखता है ।
चैन की नींद उसको आती है,
आँख भर जो थकान रखता है ।
मानते हैं सभी कही उसकी,
पास जो सच जुबान रखता है ।
शख्स वो जोश, हौसले वाला,
दूर, ऊँची उड़ान रखता है ।
नाम से, मान से, आन से अपनी,
वो सभी पर कमान रखता है ।

– 2 –

कभी जब किसी से न हारी मुहब्बत ।
मज़े में रही ये हमारी मुहब्बत ।
कभी मिल गए हमसफ़र रास्ते में,
कभी बस अकेले गुज़ारी मुहब्बत ।
निगाहें छुपाकर, निगाहें लगाकर,
यूँ ही बच-बचा कर निहारी मुहब्बत ।
जहाँ पास देखा इक मौका सुनहरा,
वहाँ ठीक हमने उतारी मुहब्बत ।
बुलाकर, बताकर, मनाकर, हँसाकर,
हमेशा यूँ हमने सँवारी मुहब्बत ।
जहाँ भी मिले जान पहचान वाले,
वहाँ हमने अपनी उधारी मुहब्बत ।

थकान और प्रेम

– श्री. भाऊराव महंत, बालाघाट,
म.प्र.

थकान...
उसी समय मिट चुकी थी
जब उसने
बड़े प्यार से
मेरे ऑफिस से घर लौटते ही कहा था-
'बहुत थके हुए लग रहे हैं आप
शायद ऑफिस में ज़्यादा काम रहा होगा
ठीक है......
आप जल्दी से फ्रेश हो जाइए
तब तक मैं चाय बना देती हूँ ।'

चाय पीकर थकान मिटाना
ये तो दूर की बात थी ।

असल बात तो यह है कि
थकान चाय से नहीं मिटती बन्धु !
थकान मिटती है प्रेम से ।

कश्ती के मुसाफिर

– डॉ. अशोक,
पटना, बिहार

लहरों से लड़ता कश्ती का मुसाफिर,
खोज रहा है अपना किनारा ।
अंधेरी रातों में दीप जलाकर,
चलता है लेकर सपना प्यारा ।

हवा के संग संवाद करता,
तूफानों से नहीं घबराता ।
टूटे पतवारों के बावजूद,
आशा का गीत सुनाता ।

नदी की गोद में जीवन बहता,
हर पल नया संदेश देता ।
कदम-कदम पर संघर्ष मिले तो,
मन फिर भी विश्वास रखता ।

छोटी कश्ती, बड़ा है साहस,
आँखों में आकाश समाया ।
मेहनत की शांत धारा ने,
सफलता का पथ दिखलाया ।

मंजिल दूर सही लेकिन,
यात्रा का अपना आनंद है ।
जो बढ़ता रहता निरंतर,
उसके लिए हर क्षण प्रचंड है ।

किनारों की चाह नहीं केवल,
चलते रहना ही पहचान है ।

कश्ती का हर एक मुसाफिर,
अपने भाग्य का निर्माण है ।

लहरों से सीखो संघर्ष करना,
हवाओं से सीखो उड़ना ।
जीवन की इस अनंत यात्रा में,
हर पल स्वयं को गढ़ना ।

दौलत और अदालत

– श्री. राम कृष्ण
रस्तोगी, गुरुग्राम,
हरियाणा

जिसके पास आज दौलत है,
उसकी ही आज अदालत है ।
न्याय यहाँ हर वक़्त बिकता है,
बस खरीदार की जरूरत है ।।

विश्वास न हो अजमा कर देख लो,
कोई मुकदमा लगा कर देख लो ।
रात क़ो भी अदालत खुल जायेगी
बस नोट खर्च करके तुम देख लो ।।

जजों के घर से ढेर सारे नोट निकलते हैं,
गिनने के लिए भी मशीनें लगानी पडती है ।
कुछ दिनों ही यह मामला चर्चा मे रहता है,
बाद मे नोटों से सबके मुँह बन्द किये जाते हैं ।।

एक ही पल में

– डॉ. अलका अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

एक पल में ही तो
सब कुछ छूट जाता है ।
जिस पल किसी का भाग्य
यूँ ही रूठ जाता है ।
एक पल में विनष्ट हुए
सारे सुनहरे स्वप्न ।
ऐसे में जीवन हुआ,
कितना दुसह, विपन्न ।
कोई अपने सुख में है
इतना अधिक निमग्न ।
उसको दिखता ही नहीं
है कहीं कोई विघ्न ।
लेकिन इसी समय है
कोई भंवर में फंसा ।
जबकि दूसरा खड़ा
है दूर खुश, हँसा ।
इधर ज्वाला झोंपड़ी में
उधर महल है ।
महल में जीवन सुखद
कुटिया में क़हर है ।
उस एक पल में किसी का
मरण हो रहा ।
लेकिन उसी पल, कोई
तृप्त, सुखी जी रहा ।

आदिवासी मूलनिवासी

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी, पमगढ़, छत्तीसगढ़

जल, जंगल और जमीन के
असली मालिक,
आपकी दुर्गति के कारण हैं
खुद को सभ्य कहने वाले
असभ्य, बर्बर,
नोचकर संपत्ति बनानेवाले
वो लोग जो
आज भी लगे हैं
अपनी उसी जुगत में,
धर्म, संस्कृति, आविष्कार
और विकास की बात करते हुए,
ले आये हैं
धरती को विनाश के कगार पर,
एक दिन वे भी मारे जायेंगे
अपनी अकड़ के साथ ही,
और हाँ अपनी लालसा की सज़ा
प्रकृति द्वारा दिलवाएँगे
सभी जीवों को व
धरतीपुत्रों को भी ।

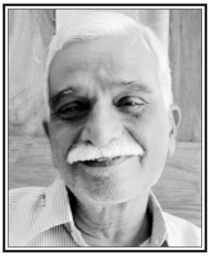

आशा

– श्री. पुष्करराय जोषी, राजकोट, गुजरात

हर मोर्चे पर हो रहा है परास्त,
कहीं से भी नहीं है आश्वस्त,
भले मूँछ पर देता ताव,
किन्तु भीतर नहीं सह पाता
हरपल पड़ते भयंकर घाव,
पृथ्वी का खून चूस कर
बनना चाहता है बलवान,
हीन करतूतों से हो रहा है हेवान,
कौन समझाएगा उसे
सच्चे सुख की परिभाषा ?
फिर भी आत्मा भर देता है
पामर में क्यों अमर आशा ?

तर्ज

स्मृति के विहंग
उड़ गये
शून्यता में सुर भरकर,
अब मैं
उन श्रुतिओ को संजोकर
रचता हूँ तर्ज़
विरह की वेदना की ।

चेहरे के पीछे

– श्री. मनु प्रताप सिंह शेखावत, झुंझुनूं, राजस्थान

चेहरा मुखौटा है ।
उस चेहरे के पीछे,
एक ऐसा चेहरा भी है,
जिसे देखा नहीं गया,
बदलते देखा गया,
महसूस किया गया ।
यहीं मनुज ने छिपा रखी है,
हजारों गंदगी,
ईर्ष्या, लोभ, काम,
क्रोध आदि को ।
मासूमियत के पीछे चालाकी,
सहृदयता के पीछे क्रूरता,
उदारता के पीछे बर्बरता,
प्रेम के पीछे धोखा,
और वैभव के पीछे दरिद्रता,
तुमने छिपा रखी है ।
और कहते हो,
कि हम सभ्य मानव हैं !

जल है तो जीवन है, जीवन अनमोल है ।

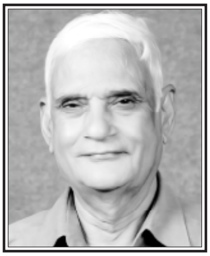

रिश्ता फीका नहीं

– श्री. उमाकांत भारती,
भागलपुर, बिहार

भाई–बहन का प्यार अनूठा,
बालपन में मीठा–मीठा,
उम्र बढ़ी तो कुछ फीका–फीका,
शादी हुई तो रिश्ता रीता ।
बहन वही है, भाई वही है,
बदला केवल जीवन–राग,
बीच में आ जाती भाभी,
बँट जाता अपनापन–भाग ।
भाई चाहे बहन को कुछ दे,
पत्नी की फिर चलती बात,
घर–गृहस्थी, बाल–बच्चे और
कम हो जाती मिलने की आस ।
माँ–बाप जब तक रहते जीवित,
भाई निभाता बहन का साथ,
राखी पर उपहार तो मिलते,
पर छोटी होती जाती बात ।
नौकरी, पैसा, घर–परिवार,
सब अपनी–अपनी दुनिया में,
भाई समर्थ हुआ तो भी अब
बहन नहीं आती उसकी राह में ।
रक्षाबंधन जब हो औपचारिक,
सूना–सूना हो उल्लास,
प्रेम जहाँ केवल रस्म बन जाए,
वहाँ कहाँ बचता है विश्वास ?
तब मत बाँधो राखी बहना,
मन को यूँ मत देना पीड़ा,
राखी धागा भर तो नहीं है,
इसमें बचपन की है क्रीड़ा ।
रिश्ते उम्र से नहीं बदलते,
बदलते हैं मन के व्यवहार,
भाई–बहन का प्रेम बचा हो,
तो हर दिन है राखी–त्योहार ।
बस इतना–सा याद रहे तुम–
राखी केवल पर्व नहीं,
दूरी चाहे जितनी बढ़ जाए,
प्यार कभी नहीं हो फीका ।

SHABARI BOOK HOUSE
Shabari Palace, 194, 2nd Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414, Ph : 94433-65414, 98427-65414
SHABARI SHABDHA SAAGAR
HINDI - HINDI - ENGLISH - TAMIL (Trilingual Dictionary)
1632 Pages | 51,000 Words
Visit us at https://books.shabari.org

महादेव

– डॉ. पवन
कुमार पाण्डे,
निजामाबाद, तेलंगाना

शिव शीश जटा, जलधार झरे ।
शिव अद्भुत, भस्म शृँगार करे ।।

नटराज तुम्हीं, डमरूधर भी,
विरुपाक्ष महेश, निरंजन भी,
परमेश्वर हो, शितिकण्ठ महा,
शशिशेखर, त्र्यम्बक, काल महा,
शिव सर्पन की, गल माल धरे ।
शिव अद्भुत, भस्म शृँगार करे ।।

अति पावन, श्रावण मास सुनो,
पथ छोड़ सभी, शिव द्वार चुनो,
शिव शर्व, त्रिलोचन, शंकर है,
गण, भूत–पिशाच भयंकर है,
शिव भक्त कभी न, कहीं न डरे,
शिव अद्भुत, भस्म शृँगार करे ।।

तज स्वर्ग सदा, गिरिवास किया,
बन देव महा, विषपान किया,
शिव रुद्र, अनादि, निरन्तर है,
शिव ही चिर सत्य व सुन्दर है,
सत, राजस, तामस शूल हरे ।
शिव अद्भुत, भस्म शृँगार करे ।।

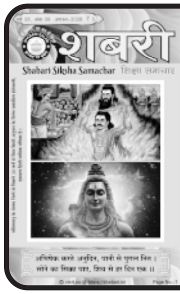

पाठकों के पत्र ...

'शबरी शिक्षा समाचार' अगस्त 2026 : साहित्यिक समीक्षा

शबरी शिक्षा समाचार का अगस्त 2026 अंक विविध साहित्यिक विधाओं और समकालीन सरोकारों का संतुलित संकलन प्रस्तुत करता है । अंक के लेख सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, पर्यावरणीय और राष्ट्रीय प्रश्नों पर विचार करते हैं । बाल साहित्य लेखन की महती आवश्यकता बच्चों के संस्कार और डिजिटल युग की चुनौतियों के बीच साहित्य की भूमिका को रेखांकित करता है । राष्ट्र–धर्म तथा थोड़ा आगे बढ़कर तो देखो जैसे लेख राष्ट्रीय चेतना, परिवर्तन और नई सोच का आग्रह करते हैं । बुढ़ापे की लाठी पारिवारिक संवेदना और वृद्धावस्था की असुरक्षा को मार्मिक कथा में बदलती है, जबकि चापलूसों का घेरा, सत्ता, अहंकार और खुशामद के दुष्परिणामों पर प्रभावी व्यंग्य करता है । बाइक पर बंधी इंसानियत व्यवस्था की संवेदनहीनता को झकझोरती है ।

कविता खंड में पर्यावरण, तिरंगा, हिन्दी, आत्मविश्वास, महँगाई, वर्षा, जीवन और आशा जैसे विषय प्रमुख हैं । ग़ज़ल खंड सामाजिक विडंबनाओं, संबंधों और मानवीय अनुभवों को संक्षिप्त, मार्मिक अभिव्यक्ति देता है । कुंडलियाँ और अन्य छंदबद्ध रचनाएँ

परंपरा तथा समकालीन विषयों का सुंदर मेल प्रस्तुत करती हैं । भक्ति-रचनाओं में शिव, पशुपतिनाथ और आस्था का भाव मुखर है । कुल मिलाकर यह अंक विचार, संवेदना, संस्कार और सृजनशीलता का सुंदर संगम है; इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि यह साहित्य को जीवन और समाज से जोड़कर देखता है ।

– डॉ. ओंकार त्रिपाठी,
दिल्ली

शबरी शिक्षा समाचार मासिक पत्रिका का प्रकाशन बहुत ही सराहनीय कार्य है । इसमें प्रकाशित लेख और कविताएँ काफी मार्मिक और ज्ञानवर्धक है । तमिलनाडु से हिन्दी और तमिल भाषा में प्रकाशित होने से पत्रिका का महत्व और बढ़ गया । सभी लेखकों और कवियों को विशेष रूप से प्रसिद्ध कवि आदरणीय श्री गजानन पांडेय जी को बहुत बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएँ ।

– श्री. जयनारायण सोनी, इंदौर, म.प्र.

प्रिय श्रीधर सेलम जी, नमस्कार । 'शबरी शिक्षा समाचार' का अगस्त 2026 अंक मिला । मुझे अति प्रसन्नता होती है जब हर महीने शबरी शिक्षा समाचार का अंक पढ़ने को मिलता है । मातृभाषा हिन्दी का तमिलनाडु से इस पत्रिका के माध्यम से प्रचार प्रसार होना अति सराहनीय है और हिन्दी को बढ़ावा देने में विशिष्ट योगदान है ।

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर
मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

आप के साहित्यिक समर्पण को सतत प्रणाम वंदन । पत्रिका रुचिकर और साहित्य को समर्पित है, आप के श्रम और साधना को देख कर उत्साह बढ़ता है । जन-जन तक इसकी पहुँच इसकी लोकप्रियता का जीता-जागता प्रमाण है ।

– डॉ. ज्ञानेन्द्र गौरव, मुंबई, महाराष्ट्र

आदरणीय, कोटि-कोटि वंदन । एक और शानदार अंक की आपको बहुत-बहुत बधाइयाँ और अनंत शुभकामनाएँ ।

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

शबरी का अगस्त अंक बहुत सुन्दर है । आपका सम्पादकीय सामयिक परिस्थितियों का अति श्रेष्ठ विश्लेषण कर रहा है । पत्रिका की विषयसामग्री स्तरीय है । आलेख, लघु लेख, कविताएँ आदि का चयन आपने बहुत विचारपूर्ण ढंग से किया है ।

आपकी पत्रिका हिन्दी का प्रचार-प्रसार अहिन्दी भाषी क्षेत्र में बखूबी कर रही है । आपका सद्प्रयास स्तुत्य है ।

– प्रो. (डॉ.) शशि तिवारी, आगरा, उ.प्र.

SHABARI BOOK HOUSE

Shabari Palace, 194, 2nd Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414, Ph : 94433-65414, 98427-65414

SHABARI LEARNER'S DICTIONARY

HINDI - HINDI - ENGLISH - TAMIL (Trilingual Dictionary)
1024 Pages | 35,000 Words
Visit us at https://books.shabari.org

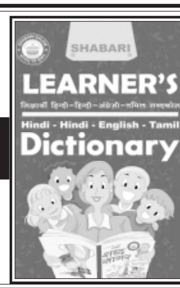

नवांकुर

पहला दिन

– लक्षिता श्रीधर,
सोना कॉलेज,
सेलम, तमिलनाडु

कल मेरे कॉलेज का पहला दिन है । जब मेरे स्कूल का पहला दिन था मुझे याद भी नहीं कि मैंने क्या किया ? जब मैंने अपनी माँ से पूछा, तब मेरी माँ ने बताया कि, मैं बहुत ज्यादा रो रही थी । आज तो मैं बता ही नहीं सकती कि मैं कितना खुश, थोड़ा घबराहट और उत्साहित हूँ ? सबसे ज्यादा मुझे उत्सुकता है कि यह नई जिंदगी, नए लोग, नया संसार कैसा होगा, इसका डर है मुझे । क्या मुझे अच्छे दोस्त मिलेंगे ? और मेरे कॉलेज का हाल कैसा होगा ? यह सारे सवाल मेरे मन में उठ रहे है । मैं अपनी भावना को बता कर समझा नहीं सकती । यह कुछ ऐसी भावना है, जो मैंने आज तक महसूस नहीं किया है ।

जिंदगी का चक्र

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज,
कोवै, तमिलनाडु

बचपन मनमोहता है प्यार से भरा होता है
बचपन में एक का नहीं सबका प्यार मिलता है
दादा–दादी के प्यार का कोई माल नहीं है
कहानी उनसे सुनी कभी मन भूल नहीं पाता है
बचपन में हमारे साथ बच्चे हो जाते हैं
कभी–कभी नाना–नानी खिलौना बन जाते हैं ।

किशोरावस्था बहुत कुछ हमें सिखाती है
एक नहीं बहुत सारी विद्याएँ हम में भर देती हैं
मिलने लगते हैं एक नहीं दोस्त अनेक तब तो
जीवन का आधार बनाकर खिलती है किशोरावस्था
पढ़ने–बढ़ने में लग जाता है मन बहुत सीखता है
किशोरावस्था जिंदगी का सफर शुरू करती है ।

एक बार काम करने कमाने जब लगता है
फिर तो हर दिन उसी चक्कर में चलता है
कमाने के लिए मानव बहुत कुछ करता है
शादी होने के बाद खुद के लिए नहीं वह जीता है
परिवार का भार अपनाकर
वह सेवक बनता है
अपने लिए नहीं अपनों के लिए जीता है ।

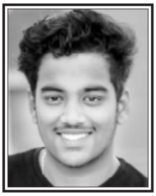

एकता

– शंकर वेंकटेश्वरन,
एलायंस यूनिवर्सिटी,
बंगलुरु, कर्नाटक

एक राजा था जिसके तीन बेटे थे। तीनों में राजा बनने की सारी काबिलियत और समझदारी थी। लेकिन, तीनों हमेशा अलग–अलग रहते थे क्योंकि उनके बीच कई बार लड़ाई और कॉम्पिटिशन होता था। राजा ने उन्हें एकजुट करने के लिए कई तरह से कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं हुआ। एक दिन राजा बीमार था। उस वक्त राजा ने वक्त तीन राजकुमारों को छड़ें का गुच्छा दिया था और बोला कि, जो इसे टुकड़े में करता है वह इस राज्य का होनेवाले राजा है। यह सुनकर तीनों जल्दी से वह छड़ें का गुच्छा टुकड़े में करने के लिए बहुत कोशिश की। लेकिन जितना भी कोशिश करके उन तीनों ने उसे नहीं कर पाया। फिर राजा ने उसे एक–एक छड़ को हटा के टुकड़े में करने के लिए बोला, फिर तीनों भी उसे बहुत आसानी से किया। फिर इसे दिखा के राजा ने उन तीनों को समझाया कि, अगर आप तीनों हमेशा एक साथ रहेंगे तो कोई भी आप लोगों को हार नहीं पाएँगे। और ऐसे अलग हुए तो बहुत आसानी से हार जाएँगे। वह राजकुमारों को राजा ने इस बात समझ कर, धीरे–धीरे आँख बंद किया। फिर वह तीन राजकुमार हमेशा एक साथ होकर राज्य पर शासन किया। इस कहानी के द्वारा, हम एक बात समझ सकते हैं कि, जहाँ एकता है वहाँ विजय है।

नवांकुर–रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए। खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें। रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं।

कृपया आयु प्रमाण–पत्र की प्रति साथ भेजें।

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें। अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

न्यायपूर्णः निर्णयः

एकस्मिन् ग्रामे एकः वृद्धः आसीत् । स्वस्य पौत्रः सम्यक् अध्ययनं कुर्यात् इति इच्छया तं दूरस्थं नगरं प्रति प्रेष्य तत्र अध्यापितवान् । प्रत्येकस्मिन् अवकाशे ग्रामम् आगच्छन् सः बालकः पितामहेन सह क्रीडित्वा, तेन कथिताः कथाः श्रुत्वा च समयं यापयति स्म ।

तस्य वृद्धस्य साहाय्यार्थम् एकः लेखाकार:आसीत् । सः वृद्धस्य आवश्यकानि सर्वाणि कार्याणि कृत्वा तस्य साहाय्यं करोति स्म ।

एकदा अकस्मात् तस्य वृद्धस्य स्वास्थ्यं क्षीणम् अभवत् । पौत्रः ग्रामात् आहूतः । वृद्धः लेखाकाराय स्वेन सञ्चितानि सहस्रं सुवर्णमुद्राः दत्तवान् । ततः स्वपौत्रं निर्दिश्य अवदत् – ''भवान्, अयं बालकः अतीव अल्पवयस्कः । धनस्य सम्यक् उपयोगं कर्तुं तस्य पर्याप्तः अभ्यासः नास्ति । अतः एतानि धनानि भवान् एव स्वसमीपे स्थापयतु । यदा अयं युवकः भविष्यति, तदा भवता इच्छितं धनराशिं तस्मै ददातु ।'' इति कथयित्वा तेन प्रतिज्ञां कारितवान् ।

लेखाकार:अपि तद् अङ्गीकृतवान् । वृद्धश्च मनःशान्त्या प्राणान् अत्यजत् ।

वर्षाणि अतीतानि । नगरे अध्ययनं कृतवान् सः बालकः युवकः अभवत् । तेन उत्तमः लौकिकानुभवः अपि प्राप्तः आसीत् । सः कश्चित् व्यवसायं प्रारभ्य चालयितुं चिन्तितवान् । तदर्थं धनस्य आवश्यकता आसीत् । अतः सः लेखाकारस्य समीपं गत्वा अवदत् – ''आर्य, मम पितामहेन भवतः समीपे निक्षिप्तं धनं मह्यं ददातु'' इति ।

लेखाकार: केवलं शतं सुवर्णमुद्राः तस्मै दत्त्वा अवदत् – ''वत्स, तव पितामहः मया इच्छितं धनमात्रं तुभ्यं दातव्यम् इति उक्तवान् । तदनुसारं मया इच्छिता धनराशिः एते शतं सुवर्णमुद्राः एव । एताभिः सुवर्णमुद्राभिः सन्तोषेण जीवनं यापय । गच्छ, सुखी भव'' इति ।

लेखाकार: स्वं वञ्चयितुम् इच्छति इति युवकःअवगतवान् । सः तम्

उक्तवान् – ‘‘मम पितामहः भवते सहस्रं सुवर्णमुद्राः दत्तवान् । भवान् तु मह्यं केवलं शतं सुवर्णमुद्राः ददाति । एतत् कथं न्याय्यम् ?’’ किन्तु लेखाकार:तस्य किमपि वचनं श्रोतुं न सिद्धः अभवत् । अतः अन्योपायाभावात् सः न्यायालयं गतवान् ।

न्यायाधीशः लेखाकारम् आहूय तं पृष्टवान् । लेखाकार: तु अवदत् – ‘‘मम कार्ये किमपि दोषः नास्ति । मया मम इच्छितानि शतं सुवर्णमुद्राः पौत्राय दत्तानि’’ इति ।

न्यायाधीशः तस्मै पाठं बोधयितुम् इच्छितवान् । सः अपृच्छत् –

‘‘तर्हि अवशिष्टानि नवशतानि सुवर्णमुद्राः कुत्र सन्ति ?’’

लेखाकार: अवदत् –

‘‘अहं तानि स्वीकृतवान् ।’’

ततः न्यायाधीशः तत्क्षणम् अवदत् –

‘‘भवतः इच्छिता एव सा धनराशिः इति कारणेन तां धनराशिं भवान् स्वयमेव स्वीकृतवान्, किल ? वृद्धाय दत्तं वचनमनुसृत्य भवता इच्छिता धनराशिः पौत्राय एव दातव्या ।

तदनुसारं भवता स्वेच्छया स्वीकृतानि नवशतानि सुवर्णमुद्राः तत्क्षणमेव पौत्राय दातव्याणि । अपि च, अनावश्यकतया पौत्रं न्यायालयं च वञ्चयितुं प्रयत्नं कृतवान् इति अपराधस्य दण्डरूपेण अपराणि शतं तदनुसारं भवता स्वेच्छया स्वीकृतानि नवशतं सुवर्णमुद्राः तत्क्षणमेव पौत्राय दातव्याः । अपि च, अनावश्यकतया पौत्रं न्यायालयं च वञ्चयितुं प्रयत्नं कृतवान् इति अपराधस्य दण्डरूपेण अपरा शतं सुवर्णमुद्राः दातव्याः इति न्यायाधीशः निर्णयं दत्तवान् ।

न्यायपूर्णः निर्णयः एव, ननु ?

Revised Book fee for VANI VIKAS Exams
from January-2027 Exams

Vani Vikas Grade-1 ... ₹ 300	Vani Vikas Grade-5 ... ₹ 340
Vani Vikas Grade-2 ... ₹ 310	Vani Vikas Grade-6 ... ₹ 350
Vani Vikas Grade-3 ... ₹ 320	Vani Vikas Grade-7 ... ₹ 360
Vani Vikas Grade-4 ... ₹ 330	Vani Vikas Grade-8 ... ₹ 370

தமிழமுது – பாம்பொடு பழகேல்

– எம். ஸ்ரீதர்,

நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

பாம்பை கண்டால் படையும் நடுங்கும் என்பார்கள். கொடிய விஷத்தை உடைய பாம்பானது மனிதர்களை நொடிகளில் மரணிக்கச் செய்து விடும் விஷம் கொண்டது. பாம்பு கடிக்கு முதலுதவி செய்வதும் உரிய நேரத்தில் மருத்துவமனை கொண்டு செல்வதும் மிகவும் அவசியமான ஒன்றாகும்.

பாம்போடு பழகுபவர்களும் எச்சரிக்கையோடு பழகுவார்கள். பாம்பு விஷத்தன்மை கொண்டது மனிதர்களை கடிக்கக் கூடியது என அறிந்தும் அதனுடன் பழகுவது என்பது சரியான ஒரு செயலாக இருக்காது. சிறந்த பாம்பு பிடி வீரர்கள் கூட பல நேரங்களில் பாம்பின் கடியால் வருந்தி இருக்கின்றனர். எனவே **பாம்பொடு பழகேல்** என ஔவையார் கூறுகிறார்.

பாம்பு பழகுவதற்காக உருவாக்கப்பட்ட இனம் அல்ல. நாய்களும் பூனைகளும் மாடுகளும் குதிரைகளும் ஏன் இனி ஏனைய பல உயிர்கள் மனிதனோடு இணைந்து வாழ்கின்றன. ஆனால் பாம்பு அப்படிப்பட்டதல்ல. பால் ஊற்றினாலும் பாம்பு கடிக்கக் கூடியது. அதுமட்டுமல்ல பாம்பு நேராகச் செல்லாமல் வளைந்து வளைந்து செல்லக்கூடியது. பாம்பு பழகியவர்களையும் கடிக்கக் கூடியது. பாம்பு மனிதனின் முழு நம்பிக்கைக்கு பாத்திரமான ஒரு உயிரினம் அல்ல. எனவே தான் தமிழ் மூதாட்டி ஔவையார் அவர்கள் **பாம்பொடு பழகேல்** எனக் கூறுகிறார்

முகத்திற்கு நேராக ஒன்றும் முதுகுக்கு பின்னால் இன்னொன்றும் பேசக்கூடிய நம்பகத்தன்மையற்ற மனிதர்களை விட்டு விலகி இருக்குமாறும் இதன் மூலம் ஔவையார் நமக்கு அறிவுரைக்கிறார். நல்லவர்களோடு பழகி நல்லவர்கள் நட்புக் கொண்டு நல்லவர்களுக்காக வாழ்ந்து நாம் நமது வாழ்வையும் சிறப்பிக்க செய்வோம்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருநறையூர் சித்தீஷ்வரம்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

''கரியின் உரியுங்
கலைமா மறியும்
எரியும் மழுவும்
உடையான் இடமாம்
புரியும் மறையோர்
நிறைசொற் பொருள்கள்
தெரியும் நறையூர்ச்
சித்தீச் சரமே.''

- ஸ்ரீ சுந்தரர் அருளிய
7ஆம் திருமுறைப் பாடல்

காவிரியின் தென்கரையில் அமைந்துள்ள தேவாரப் பாடல் பெற்ற தலங்களுள் இத்தலம் 65ஆவது திவ்யதிருப்பதி ஆகும். தஞ்சாவூர் மாவட்டம் கும்பகோணம் அருகே அமைந்துள்ள திருநறையூர் சித்தீஷ்வரம் தற்போது திருநறையூர் என்று மக்கள் வழக்கில் வழங்கப்படுகின்றது.

சைவ, வைணவ பேதங்கள் சனாதன தர்மத்தில் இல்லை என்பதின் விளக்கமாக இந்த ஆலயம் திகழ்ந்துவருவது சிறப்பு.

அருள் வரலாறு :

முன்னொரு சமயம் மேதாவி என்ற மஹரிஷி இத்தலத்து சிவனிடம் தமக்கு ஸ்ரீ மஹாலக்ஷ்மியே திருமகளாக வந்து அவதரிக்க வேண்டும் என்று ப்ரார்த்தித்தார்.

ஸ்ரீமந் நாராயணனும் ஸ்ரீ சிவபெருமானின் வழிகாட்டுதல்படி

இத்தலத்து குளத்தில் ஓர் தாமரையில் ஸ்ரீ மஹாலக்ஷ்மியை அழகிய குழந்தை வடிவில் அவதரிக்கச் செய்தார்.

திருக்குளத்தில் இருந்த ஸ்ரீ மஹாலக்ஷ்மியின் அவதாரமான அந்தப் பெண் குழந்தையை மேதாவி மஹரிஷி எடுத்துத் தன் ஆஸ்ரமம் சென்று, வஞ்சளவல்லி என்ற திருநாமம் சூட்டி சீராட்டிப் பாராட்டி வளர்த்தார்.

உரிய திருமண வயது வந்ததும் வஞ்சுளவல்லியை ஸ்ரீமந் நாராயணனுக்குத் திருமணம் செய்துவைத்தார்.

இந்தத் தாயார்தான் நாச்சியார் கோயிலில் நாராயணனின் தேவியாக அருள்கின்றாள்.

இதனை நிறைவு கூறும் வண்ணம் பொங்கல், தீபாவளி சமயங்களில் இத்தலத்திலிருந்து நாச்சியார் கோயில் தாயாருக்கு அண்ணன் வீட்டுச்சீர் அனுப்பிவரும் வழக்கம் இன்றளவும் நடைமுறையில் உள்ளது.

மேலும் வைகுண்ட ஏகாதசிக்கு மறுநாள் இத்தலத்து ஈசன் ஸ்ரீ மஹாலக்ஷ்மியுடன் நாச்சியார் கோயில் ஸ்ரீ பெருமாள் கொயிலுக்குச் சென்று வருவதும் நடைமுறையில் இருக்கின்றது.

இத்தலம் ஸ்ரீ மஹாலக்ஷ்மி திருஅவதாரம் செய்த தலம் என்பது கூடுதல் சிறப்பு.

மழலை மஹாலக்ஷ்மி :

இத்தலத்தில் மஹாலக்ஷ்மி குழந்தைவடிவில் திருக்காட்சி தருவதால் மழலை மஹாலக்ஷ்மி என்று அழைக்கப்படுவதோடு, அவளுக்கு பாவாடை சட்டை அணிவித்தே அலங்காரமும் நடை பெறுகிறது.

மன்மதன் சாபம் நீங்கியது :

நரன் என்றும் அழைக்கப்படும் மன்மதன் துர்வாச ரிஷி சாபம் காரணமாகப் பறவை உருபெற்றான். இத்தலம் வந்து ஈசனை வழிபட்டு சுய உருபெற்றான். ஆகையால் இத்தலத்து ஈசன் ஸ்ரீ நரேஷ்வரர் எனவும் அழைக்கப்படுகின்றார்.

தோல் நோய் நீங்க :

தேவர்களின் சாபத்திற்குள்ளான கோரக்க சித்தர் இத்தலம் வந்து இறைவனை வணங்கி அருள்பெற்று தோல்நோய் அகலப்பெற்றார். இதனால் இன்றும் தோல் நோயால் பாதிக்கப்பட்ட பக்தர்கள் வியாழக்கிழமைகளில் கோரக்க சித்தருக்கு நல்லெண்ணெய் அபிஷேகம் செய்து, அந்த அபிஷேக எண்ணெயைத் தங்கள் உடலில் பூசிக்குளித்து தோல் நோயிலிருந்து குணமடைந்து வருகின்றனர்.

சித்தீஷ்வரம் :

கோரக்க சித்தர், மேதாவி மஹரிஷி முதலான ரிஷிகள், சித்தர்கள் வழிபட்டு அருள்பெற்ற தலமாதலால் இத்தலம் சித்தீஷ்வரம் எனவும் அழைக்கப்படுகிறது.

சிறப்புக்கள் :

1. இத்தலத்து விநாயகர் ஸ்ரீ ஆண்ட விநாயகர் என்று சிறப்பிக்கப்படுகிறார்.
2. இத்தலத்து ஸ்ரீ மஹாலக்ஷ்மியை வழிபட அரசாளும் யோகம் கிடைக்கும் என்பது நம்பிக்கை.
3. தை கடைசி வெள்ளிக்கிழமை அம்பாளுக்கு சந்தனக் காப்பு அலங்காரம் செய்யப்படுகிறது.
4. சண்டிகேஷ்வரர் சந்நிதியில் மூன்று சண்டிகேஷ்வரர்கள் அருள்வது சிறப்பு.
5. இந்தத் திருத்தலத்தில் துர்கை ஸ்ரீ பிரஸன்ன துர்கை என்ற திருநாமத்தோடு அருள்கின்றார்.
6. கோஷ்டங்களில் துர்கை அருகில் ஸ்ரீ அர்த்தநாரீஷ்வரர், ஸ்ரீ பிரம்மா முதலானோரும் அருள்கின்றனர்
7. திக்கு வாய் நீங்க, சொல்வன்மை-பேச்சாற்றல் பெருக ஸ்வாமி-அம்பாளுக்கு நல்லெண்ணெய் அபிஷேகம் செய்து வழிபாடுகள் நடத்திப் பலன்பெற்று வருகின்றனர்.
8. ராஜராஜசோழன் முதல் மூன்றாம் குலோத்துங்க சோழன் வரை இத்தலத்தல் திருப்பணிகள் செய்து மகிர்ந்த செய்திகள் கல்வெட்டுக்கள் பறை சாற்றுகின்றன.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	:	ஸ்ரீ சித்தநாதேஷ்வரர் (எ) ஸ்ரீ வேதேஷ்வரர் (எ) ஸ்ரீ நரேஷ்வரர்
இறைவி	:	ஸ்ரீ சௌந்தர நாயகி
தலமரம்	:	பவளமல்லி
தீர்த்தம்	:	சூல தீர்த்தம், பிரம்ம தீர்த்தம், தேன்சித்தி தீர்த்தம்.
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	:	பிரமன், குபேரன், மன்மதன், மார்க்கண்டேயர், மேதாவி மஹரிஷி, கோரக்க சித்தர் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ சம்பந்தர், ஸ்ரீ சுந்தரர் ஆகியோரால் பாடல் பெற்ற திருத்தலம் திருநறையூர் சித்தீஷ்வரம்.

தரிசன காலம் :

காலை 06.00 மணி - பகல் 12.30 மணி வரை

மாலை 04.30 மணி - இரவு 08.00 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ சித்தநாதேஷ்வரர் திருக்கோயில்,
திருநறையூர் - 612 102.
தஞ்சாவூர் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

0435-2467343 / 2467129

அமைவிடம் :

தற்போது திருநறையூர் என்று மக்களால் அழைக்கப்படும் திருநறையூர் சித்தீஷ்வரம் திருமுறைத் திருத்தலமானது தஞ்சாவூர் மாவட்டம் கும்பகோணத்தில் இருந்து சுமார் 8 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.

கும்பகோணத்தில் இருந்து நகரப் பேருந்து வசதிகள் உள்ளன.

நாயன்மார்களுள் ஒருவரான ஸ்ரீ கோச்செங்கட் சோழன் கட்டிய ஸ்ரீ நாச்சியார் கோயில் என்னும் கல்கருட சேவைக்குப் புகழ்பெற்ற ஸ்ரீ விஷ்ணு ஆலயமும் இங்கு உள்ளது.

ஸ்ரீ சௌந்தர நாயகி ஸமேத
ஸ்ரீ சித்தநாதேஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
8870455599 ✆ 0427-4265414, 4552100
Website : https://shabari.in

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.09.2026.

M. Sridhar
Signature of the Publisher

शबरी परिवार से एक और भेंट

अक्षया हिन्दी पाठ्यपुस्तक

बाल कक्षाओं से पाँचवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए

आज ही खरीदें...
Get your copies now...

- ❖ मन भावन शैली
- ❖ सामाजिक मूल्यों पर आधारित
- ❖ सरल और ज्ञानवर्धक अभ्यास
- ❖ भाषा कौशल पर आधारित
- ❖ सृजन तथा चिंतना शक्तिवर्धक
- ❖ सरल तथा शुद्ध भाषा
- ❖ छात्रों में रुचि उत्पादक
- ❖ अभिभावक का प्रिय पुस्तक
- ❖ श्रेष्ठ अध्यापक का मन मोह पुस्तक

Shabari Book House proudly presents

Akshaya Hindi Paatyapusthak

a new series of Hindi third language books that inspire the learner

- ✦ Captivating storytelling
- ✦ Value-driven lessons
- ✦ Engaging book exercises
- ✦ Enhanced language proficiency
- ✦ Boosts creativity & critical thinking
- ✦ Lucid, effective language
- ✦ Sparks student curiosity
- ✦ Parent-friendly content
- ✦ The best teachers' Choice

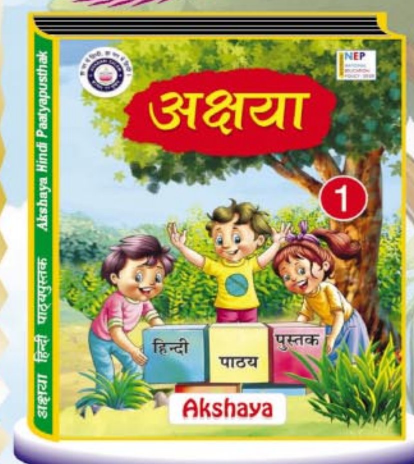

Price

LKG	₹ 90/-
UKG	₹ 100/-
Std-1	₹ 150/-
Std-2	₹ 150/-
Std-3	₹ 150/-
Std-4	₹ 150/-
Std-5	₹ 150/-

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace"
194, Second Agraharam,
Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414,
98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/

Posted at Salem HPO 636 001. September-2026

Published on 5th September-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026
Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.

Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

To

______

______

______

______

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Hindi Speaking Course

தமிழ் மற்றும் ஆங்கிலம் வாயிலாக

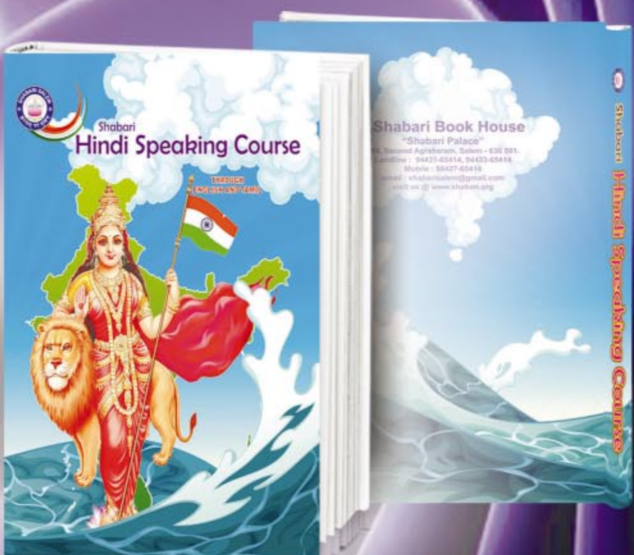

SOFT BOUND Just ₹300/-

HARD Bound Just ₹420/-

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace", 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414, 98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/